चंबल घाटी की बागी समस्या का गांधीवादी समाधान: एक अध्ययन

मनोज सिंह; डॉ. ए.एस नरवरिया

शोध छात्र, इतिहास विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस (शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय) मुरैना, मध्य प्रदेश

सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस (शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय) मुरैना, मध्य प्रदेश

Corresponding Author Email: manojsinghbhd8899@gmail.com

सारांश— _प्रस्तुत शोध पत्र में चंबल घाटी की बागी समस्या का गांधीवादी विचारको द्वारा किए गए समाधान का अन्वेषण एवं विश्लेषण करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधीवादी विचारक विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, एस.एन सुब्बाराव आदि ने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा व प्रेम के संदेशों को फैलाया। जब इन गांधीवादी विचार को चंबल घाटी की बागी समस्या के विकराल रूप का ज्ञान हुआ तो उन्होंने बागी समस्या को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। 1960 में बिनोवा भावे जी के समक्ष बीस बागियों ने आत्मासमर्पण कर अहिंसा के मार्ग को अपनाया। गांधीवादी विचारको द्वारा चंबल घाटी में इस समस्या के समाधान के लिए चंबल घाटी शांति मिशन, महात्मा गांधी सेवा आश्रम आदि संगठनों की स्थापना कर रचनात्मक कार्य किए।

इन गांधीवादी विचारको ने आत्मसमर्पण की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने, बागी एवं उनके परिजनों का पुनर्वास करना तथा स्थानीय युवा स्वयंसेवकों के साथ मिलकर उनके कल्याण और स्थानीय पर्यावरण की रक्षा के लिए कार्य किए। सामूहिक आत्मसमर्पण की इस ऐतिहासिक घटना ने विश्व को यह संदेश दिया कि गांधीवादी सिद्धांतों दया, अहिंसा और प्रेम द्वारा संगठित अपराध जैसे- आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद आदि को समाप्त किया जा सकता है। प्रमुख गांधीवादी एस.एन सुब्बाराव जी का मानना था कि स्थाई सफलता केवल अहिंसा के माध्यम से आती है और हमने 654 बागियों का आत्मसमर्पण करा कर अहिंसा के सिद्धांत की उपयोगिता को साबित किया। जिल कैर हैरिस ने कहा है कि " गांधीवादी माध्यमों से हिंसा के चक्र को तोड़ा जा सकता है, हिंसक घटनाओं को रोका जा सकता है और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को अस्तित्व में लाया जा सकता है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधीवादी माध्यमों सत्य, प्रेम व अहिंसा द्वारा बागी समस्या जैसी सामूहिक एवं संगठित अपराध को समाप्त कर सकते हैं। समाज और सरकार कुछ रियायत कर समाज की मुख्य धारा से पथभ्रष्ट हुई लोगों को पुनः सामान्य जीवन में लाया जा सकता है। इन समस्याओं के निर्माण से बचने वाले समय व साधनों का प्रयोग सामाजिक न्याय व मानव कल्याणकारी कार्यक्रमों में लगाकर देश के विकास में और गति प्रदान की जा सकती है।

कुंजी शब्द:- चंबल घाटी, बागी, आत्मसमर्पण, गांधीवाद, हृदय परिवर्तन.

I. प्रस्तावना

मध्य भारत में चंबल नदी के आसपास के विशाल क्षेत्र को चंबल घाटी कहते हैं जो तीन राज्यों मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की सीमा क्षेत्र में फैला हुआ है। चंबल घाटी में बागी समस्या का प्रमाण प्राचीन काल से मिलता है। बागी समस्या के विस्तार में राजगद्दी के दावेदार असंतुष राजकुमारों एवं राज्य शासन का विरोध करने वाले सामंतों ने भी अपना योगदान दिया। इन असंतुष्ट तत्वों को संरक्षण चंबल घाटी ने प्रदान किया। बाबर ने बाबर नामा में चंबल घाटी के जाटों और गुर्जरों का लुटेरे और दस्यु के रूप में वर्णन किया है। 1857 ई के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक तात्या टोपे को भी चंबल घाटी का संरक्षण प्राप्त हुआ था।

चंबल घाटी में आधुनिक रूप से संगठित एवं हथियारों से युक्त बागी गिरोहों की शुरुआत 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में डोंगर एवं बद्री के गिरोह से मानी जाती है। आजादी के बाद बागी समस्या 1960 से 1980 के दशक के मध्य अपने चरमोत्कर्ष पर विद्यमान रही। बागी समस्या पर जन-धन की क्षति को देख गांधीवादी विचारक इस समस्या के समाधान के लिए आगे आए। विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, डॉ. एस.एन

सुब्बाराव आदि के नेतृत्व में सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने चंबल घाटी के गांव-गांव एवं बीहड़ में सत्य, अहिंसा एवं प्रेम का प्रचार-प्रसार किया। चंबल घाटी शांति मिशन, चंबल घाटी सेवा संस्थान, महात्मा गांधी सेवा आश्रम (जौरा) के माध्यम से स्थानीय वरिष्ठ एवं शिक्षित नागरिकों ने बागी समस्या के निदान में अपना योगदान दिया। गांधीवादी विचारकों के प्रयास फलस्वरूप 1960, 1972 एवं 1976 में बागियों का सामूहिक हृदय परिवर्तन कराया गया। चंबल घाटी में बगिया का सामूहिक हृदय परिवर्तन भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी।

पृष्ठभूमि:- स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीवादी विचारधारा की सफलता ने समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया था। इसलिए गांधीवाद द्वारा बागी समस्या के जटिल मुद्दे को सुलझाने के लिए सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के लोग आगे आए। विनोबा भावे के अनुसार "जन्म से कोई डाकू पैदा नहीं होता बल्कि उसे डाकू बनाया जाता है।" इसलिए सरकार और समाज को दरियादिली दिखाते हुए कुछ रियायतों के साथ इन्हें समाज की मुख्य धारा में अपना लेना चाहिए। महात्मा गांधी के प्रमुख अनुयाई विनोबा भावे ने बागी समस्या को दया,अहिंसा एवं प्रेम के द्वारा समाधान करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को सरकार और बागी गिरोंह के पास भेजा। 1960 में जब विनोबा भावे चंबल आए तो बीस बागियों का उन्होंने हृदय परिवर्तन करा कर आत्मसमर्पण कराया। विनोबा भावे द्वारा कराए गए आत्मसमर्पण का सकारात्मक परिणाम आया । इसलिए गांधीवादी विचारकों ने बागियों के हृदय परिवर्तन के कार्यक्रम को वृहद स्तर पर चलने के लिए जयप्रकाश नारायण का आवाहन किया।

जयप्रकाश नारायण अक्टूबर 1971 में पटना स्थित अपने निवास कदमकुआं पर शाम की समय जब आराम कर रहे थे, तब चंबल के बगियों के प्रतिनिधियों ने उनसे मुलाकात की। उन्होंने बागियों के सामूहिक आत्मसमर्पण की मंशा को जाहिर किया। जे.पी ने इस कार्य के लिए विनोबा भावे का नाम सुझाया। इन प्रतिनिधियों ने कहा कि विनोबा भावे जी ने अपने स्वास्थ्य के कारण असमर्थता व्यक्त की है, इसलिए इस दायित्व को आपको ही लेना होगा। बागियों के प्रतिनिधियों में से एक स्वयं माधौ सिंह, जिन पर सरकार ने डेढ़ लाख रुपए की इनाम रखी थी, के निवेदन पर बागियों के आत्मसमर्पण कराने का उन्होंने बीड़ा उठाया। जयप्रकाश जी ने सामूहिक आत्मसमर्पण की प्रक्रिया को धरातलीय रूप देने के लिए वाराणसी स्थित गांधी विद्या संस्थान के सदस्यों को चंबल घाटी में भेज कर बागियों की पूरी समस्या पर शोध करने का काम सौंप दिया। इस शोध कार्य के आधार पर आगे की रूपरेखा बनाई गई। जेपी ने इस कार्य को एक मिशन के रूप में करते हुए महावीर भाई (विनोबा भावे द्वारा बनाई गई चंबल घाटी शक्ति समिति के मंत्री), हेमदेव शर्मा (ग्वालियर), चरण सिंह, पूर्व बागी लोकमन दीक्षित व तहसीलदार (मानसिंह के पुत्र) आदि का सहयोग प्राप्त किया। इन गांधीवादियों ने हृदय परिवर्तन के कार्यक्रम को वृहद रूप देने के लिए महात्मा गांधी सेवा आश्रम, चंबल घाटी शांति मिशन, चंबल घाटी सेवा संस्थान आदि संगठनों की स्थापना की।

जयप्रकाश जी ने सामूहिक आत्मसमर्पण कराने की प्रक्रिया में केंद्रीय गृह मंत्री और उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व राजस्थान के मुख्यमंत्री को पत्र लिखे। इन सब की ओर से जयप्रकाश जी को काफी उत्साहवर्धक और सहानुभूतिपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों ने हर संभव सहायता जयप्रकाश नारायण को देने का अश्वासन दिया।

अस्वस्थ होने के बावजूद जयप्रकाश नारायण एवं उनके शांति मिशन के स्वयंसेवकों ने दिन-रात अपना कार्य जारी रखा। दिसंबर 1971 के दूसरे सप्ताह में जयप्रकाश जी ने चंबल घाटी के बागियों के नाम एक अपील जारी की। जयप्रकाश नारायण ने कहा आजकल हमारा देश एक नाजुक दौर से गुजर रहा है। संकट की इस घड़ी में जबकि सारा देश अपनी सुरक्षा और आत्म सम्मान के प्रति प्रयत्नशील है, चंबल घाटी के बागी भाइयों से मेरी अपील है कि वे भी अपना गलत रास्ता छोड़कर देश के साथ सहयोग करें। और वे अपनी गतिविधियां बंद कर दें और हिम्मत के साथ समाज के सामने अपना आत्म समर्पण करें। इस अपील की प्रतियां चंबल घाटी में बटवाई गई। इसके बाद धीरे-धीरे बागी एवं उनके संबंधियों ने चंबल घाटी शांति मिशन, महात्मा गांधी सेवा आश्रम (जौरा) आदि संगठनों के साथ संपर्क स्थापित किया। महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा (मुरैना) के क्षेत्र को घोषित शांति क्षेत्र बना दिया गया। इस प्रकार मार्च तक शांति मिशन के स्वयंसेवकों ने चंबल घाटी के सभी बड़े बागियों से संपर्क कर उन्हें आत्म समर्पण के लिए तैयार कर लिया। सामूहिक आत्म समर्पण के संबंध में जयप्रकाश नारायण ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से मुलाकात की, तो उन्होंने जयप्रकाश का उत्साहवर्धन किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर अदालत बागियों को फांसी की सजा दे भी देती है तो केंद्र सरकार उसे सजा को काम करवा देगी और किसी को फांसी नहीं होने देगी।

आत्मसमर्पण की प्रक्रिया का प्रारंभ:- जयप्रकाश नारायण अपनी पत्नी प्रभावती के साथ 11 अप्रैल की सुबह ग्वालियर पहुंच जाते हैं। वह पगारा बांध स्थित विश्राम गृह में ठहरते हैं। यहां आत्मसमर्पण का कार्यक्रम निश्चित किया जाता है। पगार कोठी में बगियों का जयप्रकाश से मिलने का कार्यक्रम चला रहा। 13 अप्रैल को एक पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह रखा गया जिसमें बागियों के साथ उनके परिवार के लोग शामिल

हुए। महात्मा गांधी तथा विनोबा भावे की तस्वीर के सामने सभी ने हिंसा के मार्ग को छोड़ने का प्रण लिया। इस कार्यक्रम की शुरुआत तुकड़ोंजी महाराज के भजन "आया द्वार तुम्हारे राम आया द्वार तुम्हारे" से हुई। भजन को सुनते-सुनते जयप्रकाश जी के साथ-साथ सभी बागियों की आंखे नाम हो गई। इसके बाद एक-एक करके अन्य बागी लोग आते और जयप्रकाश उन्हें गले लगाते, फिर उनकी पत्नी प्रभावती बागियों को तिलक लगाकर हाथकटे सूट की हाथ से बनी राखी बांधती। कार्यक्रम के अंत में जयप्रकाश नारायण ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा "बहनों आप देख रही हैं कि कैसे अद्भुत घटना घट रही है। बरसों से बीहड़ में घूमते आपके घर के लोग आज वह अपने हथियार के साथ अपनी मर्जी से कोई दबाव नहीं, कोई जोर नहीं, यहां एकत्रित हुए हैं और कल महात्मा गांधी सेवा आश्रम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सामने आत्मसमर्पण करेंगे और अपना नया जीवन प्रारंभ करेंगे। आपको चिंता होगी कि अब उनका क्या होगा? आपका क्या होगा? आपके बच्चों का क्या होगा? यह आपके दिल में भय होगा। मैं आपसे विनयपूर्वक कहना चाहता हूं कि भय को आप अपने हृदय से निकाल दीजिए। परमात्मा पर भरोसा कीजिए। उसकी ही यह लीला है की चंबल घाटी के ये मशहूर बागीयों (जिन पर लाखों का इनाम घोषित है) का ऐसा दिल बदला की उन्होंने अपने जीवन को नई दिशा में इस तरह फेर लिया। इस रास्ते पर चलने से किसी का बुरा नहीं होगा।

जौरा स्थित महात्मा गांधी सेवा आश्रम में होने वाले आत्मसमर्पण को देखने के लिए गांव- शहर से भारी भीड़ एकत्रित हुई। जयप्रकाश एवं प्रभावती के सामने सबसे पहले मोहर सिंह के गिरोंहों ने आत्मसमर्पण किया। मोहर सिंह का गिरोहों उस समय चंबल का सबसे संगठित और आधुनिक शास्त्रों से सुसज्जित गिरोहों (उस पर दो लाख रू का इनाम था) था जे.पी एवं अन्य गांधीवादियों के वचनों से मोहर सिंह का हृदय परिवर्तित हुआ तथा उसने हिंसा के रास्ते को छोड़ आत्मसमर्पण करने का निश्चय किया। देखते ही देखते अन्य बागियों के दिल भी पिघलने लगे और एक के बाद एक बागियों के दल आते रहे और महात्मा गांधी की जय, विनोबा बाबा की जय, जय प्रकाश की जय, आदि नारों से पूरा चंबल का इलाका गूंज उठा। इस अहिंसा के अद्वितीय उदाहरण को देखने के लिए आस-पास के हजारों लोग दूर दूर से एकत्रित हुए।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा में 14 अप्रैल 1972 को मोहर सिंह, स्वरूप सिंह, पंचम सिंह, तिलक सिंह के दल के 82 बागियों ने, 16 अप्रैल को माधव सिंह, मलखान सिंह, जगदीश सिंह, कल्याण सिंह, रूप सिंह, जियालाल, हरविलास आदि दल के 81 बागियों ने और फिर 17 अप्रैल को ग्वालियर में नाथू सिंह के गिरोह ने जयप्रकाश के समक्ष गांधीजी के चित्रों के सामने अपनी बंदूक को रख आत्मसमर्पण किया। इस प्रकार महात्मा गांधी के चित्र के सामने स्टैंडगन, मशीन गन, ऑटोमेटिक राइफल, टेलीस्कोप राइफल, कारतूस आदि देसी-विदेशी हथियारों का अंबार सा लग गया था। प्रत्येक आत्मसमर्पण करने वाले बागी को जयप्रकाश नारायण ने 'रामायण' और विनोबा भावे के 'गीता प्रवचन' की एक-एक प्रति भेंट स्वरूप प्रदान की। माधौ सिंह ने सभी बागियों की तरफ से सर्व समाज से क्षमा याचना वाला निवेदन पढ़कर सुनाया "हम अपने आप को समाज की सेवा के लिए समर्पित करते हैं। बाबा विनोबा जी और बाबू जयप्रकाश जी के आशीर्वाद के साथ हम अपनी नई जिंदगी शुरू कर रहे हैं। हमसे बहुत भूल हुई हैं। उसके लिए हमें दिल से पछतावा हो रहा है। हमारी वजह से जिन-जिन को दुख हुआ और तकलीफ हुई उन सब से हम माफी मांगते हैं।" बागियों के इस सामूहिक आत्मसमर्पण की घटना को समाचार पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। इंग्लैंड के बीबीसी और अमेरिका के टाइम्स मैगजीन के प्रतिनिधि सामूहिक आत्म समर्पण के दिन महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में उपस्थित थे। टाइम्स मैगजीन ने बागियों के आत्मसमर्पण को जयप्रकाश नारायण के बहुत बड़े योगदान के रूप में दिखाया। टाइम्स मैगजीन ने यहां तक लिखा कि "हमारे देश में लोग एक जमाने में गांधी के अहिंसात्मक रास्ते को अव्यावहारिक मानते थे। लेकिन अब हमारे देश में भी लोग यह समझने लगे हैं कि अहिंसा एकदम अव्यावहारिक वस्तु नहीं है।"

शासन और समाज की उदारता:- बागियों के आत्म समर्पण को वृहद रूप देने के लिए शासन और समाज के द्वारा कुछ रियायते दी गई। जिनमें बागियों की प्रमुख मांगे थी कि किसी को भी फांसी की सजा नहीं दी जाए, मुकदमे एक ही जगह चलाए जाएं, पुलिस छह महीनो के अंदर सारे मामले पेश कर दे और अदालत अधिक से अधिक तीन वर्षों में सारे मामले को निपटा दे, जेल में हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, हथकड़ियां ना पहनाई जाए, जब तक जेल में रहे हमारे बाल बच्चों को संभाला जाए। जयप्रकाश जी के अनुसार बगिया की यह मांगे उचित थी क्योंकि वर्षो से बीहड़ में भटकते रहने से इनके अंदर का इंसान मर चुका था। अतः उसे जिंदा करने के लिए उनके साथ प्रेम और अच्छे व्यवहार का होना बिल्कुल जरूरी था। देश व समाज में उनसे अच्छा व्यवहार हो, उन्हें यह एहसास कराया जाए कि उनकी पुरानी जीवन शैली से आने वाली जीवन शैली कितनी सुखमय और शांतिपूर्ण होगी।

गांधीवादी माध्यमों का प्रयोग:- गांधीवादी स्वयंसेवकों के द्वारा चंबल घाटी के बीहड़ों में सत्य, अहिंसा और प्रेम का प्रचार-प्रसार किया गया। धार्मिक ग्रंथ रामायण और गीता आदि के उपदेशों का हवाला हिंसा के मार्ग को छोड़ने के लिए दिया गया। महात्मा गांधी एवं विनोबा भावे के

प्रवचनों का वाचन जगह-जगह किया गया। अहिंसा के संदेश की कई प्रतियां गई। गांधीवादियों के द्वारा बागियों के परिवारजनों, संबंधियों एवं समाज के वरिष्ठ जनों के द्वारा हिंसा का मार्ग को छोड़ने का निवेदन किया गया। चंबल के बीहड़ों गांव-गांव में नाटकों का मंचन किया गया, जिनमें सद्दमार्ग पर चलने का संदेश निहित था। गांधी जी एवं विनोबा बाबा (भावे) की तस्वीरों के सामने जब बागियों ने बंदूक रख, पूर्व के कर्मों के प्रति पश्चाताप हुआ तो यह दृश्य बड़ा दिलचस्प था। प्रभावती व अन्य बहनों के द्वारा बागियों के राखी बांधने पर उनका मन भाव विभोर हो गया। उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी और उन्होंने आत्मसमर्पण कर अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रण लिया। इस अवसर पर जयप्रकाश नारायण जी ने पूर्व बागियों को 'रामायण' और विनोबा भावे के 'गीता प्रवचन' की एक-एक प्रति भेंट स्वरूप प्रदान की।

II. निष्कर्ष

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित चंबल घाटी दुर्गम बीहड़, आर्थिक विपन्नता, आसमान लिंगानुपात, जातिवाद एवं हिंसक संस्कृति के लिए विख्यात रही है। यहां बागी समस्या को पोषित करने का कार्य चंबल क्षेत्र के अपराधजनक सामाजिक व्यवहार, भौगोलिक स्थिति एवं प्रशासनिक संगठनों ने किया। डॉक्टर आर. ए. भारत शास्त्री के अनुसार "चंबल घाटी की बागी समस्या उतनी ही पुरानी है जितना की चंबल घाटी का समाज"। एरिक हॉब्सबॉम ने डाकुओं को सामाजिक डाकू माना है, जो इतिहास के कई समाजों में उपस्थित थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आए नए परिवर्तनों ने अभिजात वर्ग के विशेष अधिकारों पर विराम लगा दिया, जिससे जमींदार वर्ग में असंतुष उत्पन्न हुआ, जो बागी समस्या में वृद्धि का एक कारण था।

राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीवादी विचारधारा की सफलता ने समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त कर लिया था। इसलिए गांधीवाद द्वारा बागी समस्या के जटिल मुद्दे को सुलझाने के लिए सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के लोग आगे आए। विनोबा भावे के अनुसार "जन्म से कोई डाकू पैदा नहीं होता बल्कि इस डाकू बनाया जाता है"। इसलिए सरकार और समाज को दरियादिली दिखाते हुए कुछ रियायतों के साथ इन्हें समाज की मुख्य धारा में अपना लेना चाहिए। महात्मा गांधी के प्रमुख अनुयाई विनोबा भावे ने बागी समस्या को दया, अहिंसा एवं प्रेम के द्वारा समाधान करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को सरकार और बागी गिरोहों के पास भेज। 1960 में जब विनोबा भावे चंबल आए तो बीस बागियों का हृदय परिवर्तन कर आत्मसमर्पण कराया गया । विनोबा भावे द्वारा कराए गए बागी आत्म समर्पण का सकारात्मक परिणाम सामने आया। गांधीवादी विचारको ने बागियों के हृदय परिवर्तन के कार्यक्रम को वृहद स्तर पर चलने के लिए चंबल घाटी शांति समिति की स्थापना की। 1972 में बागियों के आत्मसमर्पण के कार्यक्रम का नेतृत्व गांधीवादी विचारक जयप्रकाश नारायण ने किया। जयप्रकाश नारायण ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी एवं मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के मुख्यमंत्री का सहयोग प्राप्त किया। अप्रैल 1972 में 500 से अधिक बागियों ने जयप्रकाश नारायण, उनकी पत्नी प्रभावती तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पी.सी सेठी की उपस्थिति में महात्मा गांधी सेवा आश्रम (जौरा) में महात्मा गांधी के चित्र के सामने हथियार रख हिंसा के मार्ग को त्यागने का संकल्प लिया। 1976 में गांधीवादी विचारक एसएन सुब्बाराव के नेतृत्व में बटेश्वर में बागियों का हृदय परिवर्तन कराया गया। कहा जाता है कि 1960 से 1978 के मध्य करीब 650 दस्युओं ने आत्म समर्पण किया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गांधीवादी माध्यमों सत्य, अहिंसा व प्रेम द्वारा बागी समस्या जैसी सामूहिक एवं संगठित अपराध को समाप्त किया जा सकता है। समाज और सरकार कुछ रियायत कर समाज की मुख्य धारा से विचलित हुए लोगों को पुन: सामान्य जीवन में लाया जा सकता है। गांधीवादी विचारक विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण द्वारा चलाए गए बागियों के हृदय परिवर्तन के कार्यक्रम से बागी संस्कृति में भारी गिरावट देखी गई, इससे अपराधों में भी कटौती आई हैं। गांधीवाद के द्वारा बागी समस्या जैसी अन्य समस्याओं पर होने वाले सरकार व समाज के साधनों के व्यय से बचा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आलम, एस. (2020), बीहड़ में साइकिल, जालौन, चंबल फाउंडेशन.
2. Https://www.spsmedia.in/gandhian-philosophy.

3. Https://thebetterindia.com/312801/gandhian-sn-subba-rao-helped-chambal-valley-dacoits-surrender-history/.
4. खान, जेड.एम एंड सिंह, डी.आर. (1980), सोशल डिफ्रेंटेशन विक्टिमाइजेशन बाई डकैत गैंग्स इन चंबल वैली, इंडियन जनरल ऑफ़ सोशल वर्क.
5. जोशी एट अल. (1972) चंबल की बंदूके गांधी के चरणों में, भोपाल, माधव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय.
6. तमन्ना, एम.के (1972), ये खूखार डाकू, नई दिल्ली, हिंदी पॉकेट बुक.
7. दुबे, के.सी एट अल (1982) मेकिंग ऑफ डकैत, इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ सोशल सायकियाट्री.
8. देसाई, आर. (1999), विनोबा साहित्य-19, वर्धा पांरधाम प्रकाशन.
9. भारत शास्त्री, आर. ए. (2002), चंबल घाटी की बागी समस्या का समाजशास्त्र, उदयपुर, हिमांशु पब्लिकेशन.
10. भारतीय, संतोष. (2005), पत्रकारिता: नया दौर नई प्रतिमान, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
11. शेखर, संजय कुमार .(2005), स्वराज से लोकनायक: चंबल के बागियों का आत्मसमर्पण, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.
12. हॉब्सबॉम, ए. (1969), बैंडित, लंदन, विडेनफील्ड एंड निकोलसन वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी.